अनुसूचित जाति की सफाईकर्मी महिलाओं में धार्मिक आस्था : एक समाजवैज्ञानिक अध्ययन

डॉ0 गनौरी पासवान*

सफाईकर्मी अधिकतर अनुसूचित जाति की महिलाएँ हैं। प्रारम्भ से ही अनुसूचित जाति की महिलाओं पर समाज के प्रत्येक वर्ग द्वारा शोषण एवं दबाव रहा है। वे कभी भी स्वतंत्र रूप से किसी कार्य को करने में सक्षम नहीं है। उनपर समाज एवं परिवार का प्रतिरोध बना रहता है। अनुसूचित जाति की महिलाओं की स्थिति स्वतंत्रता के 71 वर्षों बाद भी सुधरी नहीं है। उनकी स्थिति में सुधार हेतु सरकार ने भरसक प्रयास किया है। कानून में अधिनियमों के तहत उन्हें विशेष आरक्षण प्रदान किया गया है। इसके अतिरिक्त पंचवर्षीय योजनायें, समन्वित विकास कार्यक्रम, जवाहर रोजगार कार्यक्रम, ट्राइसेम, हाकरा एवं अनुसूचित जाति महिला कल्याण कार्यक्रम द्वारा महिलाओं की स्थिति को सुधारने की भरपूर चेष्टा की जा रही है। उनके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आवास हेतु विभिन्न कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं,जैसे– प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, महिला एवं शिशु संरक्षण केन्द्र तथा इन्दिरा आवास योजना। इन सारे प्रयासों का लाभ अनुसूचित जाति की महिलाओं को मिल रहा है। भारत स्वच्छ योजना के अन्तर्गत बड़े पैमाने पर सफाईकर्मी महिलाओं को रोजगार प्रदान किया गया है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा हे।

मनुष्य की सबसे अनोखी और मेधावी रचना समाज है। समाज के बिना मनुष्य मनुष्य नहीं है। समाज ही मनुष्य के जीवन को गतिशीलता को निर्धारित करता है। समाज को स्वस्थ एवं नैतिक आधार की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। इस आधार को दृढ़ बनाता है– मनुष्य का धर्म! धर्म मनुष्य के अहं को नष्ट कर उसे समाजपयोगी प्राणी बनाता है, उसके अन्दर मनुष्यत्व की उर्जा को समाहित करता है। धर्म मनुष्य के अन्दर ऐसी प्रेरणा, भावना प्रवृति एवं विधि व्यवस्था है, जिसका लक्ष्य स्पष्ट रूप से ईश्वर ही है। आदर्श व्यक्ति और आदर्श समाज का विकास करने और मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को उदाप्त बना देने हेतु धर्म के सिवाय और कोई तथ्य नहीं है। मानव समाज में धर्म इतना सार्वभौमिक, स्थायी और व्यापक है कि इसे समझे बिना इस समाज को नहीं समझा जा सकता।

***ग्राम+पो. उत्तरसेरथु, थाना–पाली, जिला–जहानाबाद (बिहार)**

सफाईकर्मी महिलायें गन्दगी साफ करने का कार्य करती हैं, लेकिन वह अपने कार्यों से घृणा नहीं करती हैं, क्योंकि वह समझती है कि उन्हें जो कार्य दिया गया है, उसे करना उसका दायित्व है। सफाईकर्मी महिलायें अन्य जाति की महिलाओं की तरह धर्म के प्रति गहरी आस्था रखती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :

1. धार्मिक मान्यताओं के कारणों की जानकारी प्राप्त करना।
2. धार्मिक मान्यताओं के स्वरूपों पर प्रकाश डालना।

उपकल्पनाएँ :

1. सफाई कार्य में संलग्न महिलायें अन्य सम्प्रदाय के साथ धार्मिक लगाव कम रखती है।
2. सफाईकर्मी महिलाओं को अपने कुल देवता की जानकारी नहीं है।

अध्ययन का क्षेत्र :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए पटना नगर का चयन किया गया है।

निदर्शन :

पटना नगर से 200 सफाईकर्मी महिलाओं का चयन सुविधाजनक निदर्शन प्रणाली के द्वारा किया गया है।

तथ्य विश्लेषण :

तालिका संख्या–1

प्रश्न : क्या आप धर्म में आस्था रखती हैं?

अभिमत	संख्या	प्रतिशत
हाँ	170	85.0
नहीं	30	15.0
योग	200	100.0

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि 85 प्रतिशत सफाईकर्मी महिलायें धर्म में आस्था रखती हैं तथा मात्र 15 प्रतिशत महिलायें धर्म के प्रति आस्था नहीं रखती हैं।

तालिका संख्या–2

प्रश्न : आप धर्म के प्रति आस्था क्यों रखती है?

अभिमत	संख्या	प्रतिशत
सुख एवं शान्ति के लिये	160	80.0
पूर्वजों की मान्यताओं के कारण	12	6.0
परिवार के दूसरे सदस्यों के कारण	16	8.0
व्यक्तिगत हितों की पूर्ति के लिये	12	6.0
योग	200	100.0

तालिका 2.0 से ज्ञात होता है कि 80 प्रतिशत सफाईकर्मी महिलायें सुख एवं शान्ति के लिये, 6.0 प्रतिशत पूर्वजों की मान्यताओं के कारण, 8 प्रतिशत परिवार के दूसरे सदस्यों के कारण तथा 6 प्रतिशत व्यक्तिगत हितों की पूर्ति के लिये धर्म के प्रति आस्था रखती है।

तालिका संख्या–3

प्रश्न : क्या आप व्रत करती हैं?

अभिमत	संख्या	प्रतिशत
हाँ	136	68.0
नहीं	64	32.0
योग	200	100.0

तालिका 03 से ज्ञात होता है कि 68 प्रतिशत सफाईकर्मी महिलायें व्रत करती हैं। 32 प्रतिशत महिलाओं ने नकारात्मक उत्तर दिया।

तालिका संख्या–4

प्रश्न : आप कौन–कौन से व्रत करती हैं?

अभिमत	संख्या	प्रतिशत
एकादशी व्रत	40	20.0
पूर्णिमा व्रत	34	17.0
सोमवार का व्रत	36	18.0
शनि देवता का व्रत	40	20.0
गुरूवार का व्रत	30	15.0
अन्य	20	10.0
योग	200	100.0

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि क्रमशः 20 प्रतिशत, 17 प्रतिशत, 18 प्रतिशत, 20 प्रतिशत, 15 प्रतिशत तथा 10 प्रतिशत सफाईकर्मी महिलायें एकादशी व्रत, पूर्णिमा व्रत, सोमवार का व्रत, शनि देवता का व्रत, गुरूवार का व्रत तथा अन्य व्रत करती है।

तालिका संख्या–5

प्रश्न : क्या आप पूजा करती हैं?

अभिमत	संख्या	प्रतिशत
हाँ	170	85.0
नहीं	30	15.0
योग	200	100.0

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि 85 प्रतिशत सफाईकर्मी महिलायें पूजा करती हैं, पूजा करने के लिए मंदिर भी जाती हैं, पूजा करने के लिए धार्मिक आयोजन भी करती हैं।

तालिका संख्या–6

प्रश्न : क्या आपको कुल देवता की जानकारी है?

अभिमत	संख्या	प्रतिशत
हाँ	74	37.0
नहीं	126	63.0
योग	200	100.0

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि 37 प्रतिशत सफाईकर्मी महिलाओं को अपने कुल देवता की जानकारी है तथा 63 प्रति सफाईकर्मी महिलाओं को कुल देवता की जानकारी नहीं है।

तालिका संख्या–7

प्रश्न : क्या आप अन्य सम्प्रदायों के साथ धार्मिक लगाव रखती हैं?

अभिमत	संख्या	प्रतिशत
हाँ	70	35.0
नहीं	130	65.0
योग	200	100.0

उपर की तालिका से ज्ञात होता है कि 70 प्रतिशत सफाईकर्मी महिलायें अन्य सम्प्रदायों के साथ धार्मिक लगाव रखती है तथा 65 प्रतिशत सफाईकर्मी महिलाओं ने नहीं में उत्तर दिया।

निष्कर्ष : निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि हमारे देश में सफाई के क्षेत्र में सफाईकर्मी महिलाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सफाईकर्मी महिलायें केवल सफाईकार्य में ही अपना समय व्यतीत नहीं करती बल्कि धार्मिक आस्था में कुछ समय देती हैं। सफाईकर्मी महिलाओं का मानना है कि धर्म के अभाव में व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। सफाईकर्मी महिलायें धार्मिक मान्यताओं का पालन सुख एवं शान्ति के लिये तथा अन्य कारणों से करती है। सफाईकर्मी महिलायें पुण्य लाभ के लिये व्रत करती है। वे पूजा–पाठ भी करती है। मंदिर जाती है, धार्मिक आयोजनों को सम्पन्न करती है। सफाईकर्मी महिलाओं में से अधिकतर महिलाओं को कुल देवता की जानकारी नहीं है। कुछ सफाईकर्मी महिलायें दूसरे सम्प्रदाय के साथ धार्मिक लगाव रखती है, लेकिन इनकी संख्या बहुत ही कम है।

संदर्भ सूची :

1. त्रिपाठी, शंभू रत्नः भारतीय संस्कृति और समाज, किताब घर, आचार्य नगर, कानपुर, 1963
2. सिंह, माहेश्वरी महेशः हमारे सांस्कृतिक एवं पर्व त्योहार, पारिजात प्रकाशन, पटना
3. रूपचन्द गौतमः दलित मानवाधिकार, कान्ति पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2008
4. त्रिपाठी, चन्द्रवलीः भारतीय समाज में नारी आदर्शों का विकास, दुर्गावती प्रकाशन, गोरखपुर, 1981
5. राष्ट्रीय सहारा न्यूज चैनल, 10 मई 2007
6. सामाजिक न्याय, मानवाधिकार और पुलिस, पृ.173–274
7. हम दलित, नवम्बर 2005, पृ.03